CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2025-8.445

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

वैदिक संस्कार पद्धति में निहित पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा

हस्तु रानी
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)
डॉ. मीनाक्षी मिश्रा
शोध निर्देशक
भारती टी. टी. कॉलेज, श्रीगंगानगर
Email: hasturanigodara@gmail.com, Mobile-8290597190

……………………………………………………………………….
First draft received: 15.11.2025, Reviewed: 18.11.2025
Final proof received: 21.11.2025, Accepted: 28.11.2025

सारांश

वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण विश्व स्तर का प्रमुख मुद्दा है। 'पर्यावरण' परि और आवरण दो शब्दो से मिलकर बना है, अर्थात् चारों ओर से घिरा हुआ। पर्यावरण में जल मंडल, स्थल मंडल और वायु मंडल सम्मिलित है। यदि इनमें से कोई एक घटक का भी संतुलन बिगड़ जाए तो पर्यावरण प्रभावित होता है। जिसका प्रभाव जीव जगत पर भी पड़ता है। वेदों में सम्पूर्ण पर्यावरण को प्रकृति का आवरण माना गया है। अथर्ववेद में पर्यावरण के लिए वृतावृत, अभिवर, अवृत्तः, परिवृत शब्दों का प्रयोग किया गया था। प्रकृति के पंच महाभूत पृथ्वी, जल, हवा, अग्नि, आकाश जैविक एवं भौतिक पर्यावरण की रचना करते है। वेदों और उपनिषदों में पंच महाभूतों को दैवीय शक्ति माना गया है। वर्तमान विज्ञान को भी प्रकृति के इन रहस्यों तक पहुँचने के लिए लम्बे दौर से गुजरना पड़ा। वैदिक मनीषियों ने हजारों वर्ष पूर्व प्रकृति के इन रहस्यो और उपयोगिता का पता लगा लिया था। शास्त्रों के अनुसार मनुष्य जीवन के लिए कुछ अपेक्षित नियम बनाये गये है। यह नियम ही संस्कार है। वैदिक संस्कार पद्धति के अन्तर्गत गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, मुण्डन, कर्णविध विद्यारंभ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास और अन्त्येष्टि संस्कार आते हैं। यह संस्कार व्यक्ति के जन्म पूर्व से लेकर मरणोत्तर तक अलग-अलग समय पर किये जाते हैं। भारतीय संस्कार परम्परा में दैनिक जीवन में पर्यावरण को आध्यात्मिकता से जोड़ते हुए पर्यावरण संरक्षण को प्रेरित करने का कार्य करती है। अतः वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति मंे पर्यावरण संरक्षण को महत्त्व दिया जाने लगा। वेदों में प्राकृतिक तत्त्वों के अमर्यादित और अनावश्यक उपयोग के द्ष्परिणामों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया था कि पर्यावरण असन्तुलन के दुष्परिणाम सम्पूर्ण विश्व के लिए हानिकारक है।

मुख्य शब्द: *वैदिक भारत, पर्यावरण संरक्षण, जल मंडल, स्थल मंडल, वायुमंडल, जैविक, भौतिक, सांस्कृतिक, पंचमहाभूत आदि.*

परिचय

पर्यावरण विज्ञान वैदिक संस्कृति की देन है। अथर्ववेद मे पर्यावरण/परिवृत्/परिवेष्टन के समतुल्य अवृत्तः वृतावृत, अभिवर, परिवृत्त शब्दों का प्रयोग पर्यावरण के लिए किया गया है। पर्यावरण को जैविक, भौतिक और सांस्कृतिक तीन प्रकार का माना गया है। वनस्पति, मानव, जीव-जन्तु आदि जैविक स्थल, मिट्टी, खनिज आदि भौतिक और राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि सांस्कृतिक तत्त्वों की परस्पर क्रियाशीलता से सम्पूर्ण पर्यावरण की रचना होती है। अथर्ववेद में परिवेश के तीन आवरणों का उल्लेख है - वायु, जल एवं पौधे। इन्हें 'चंदन-सी' के नाम से संबोधित किया है। जिसका अर्थ है प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध आवरण। गुणों से युक्त इन तत्त्वों का विवेकपूर्ण उपयोग करने का निर्देश वेदों में दिया गया है।

वैदिक संस्कृति की झलक वेदो, उपनिषदों, पुराणों और संस्कार आयोजनों दिखाई देती है। 'वेद' वैदिककाल का सबसे प्राचीन ग्रन्थ और पाठ्यक्रम की पाठ्य पुस्तक भी रहे है। वेद के पृथ्वी सूक्त, अग्नि सूक्त, वरुण सूक्त एवं आप सूक्त में कहा गया है कि जीवन जीने के लिए स्वच्छ हवा, स्वच्छ भोजन, स्वच्छ भूमि तथा स्वच्छ वातावरण होना आवश्यक है।

संस्कार का अर्थ- पूर्ण करना, संस्कृत करना, तैयार करना, सजावट, अंलकार आदि है।[1] शा6ोें के अनुसार मनुष्य जीवन के लिए कुछ अपेक्षित नियम बनाये गये है। यह नियम ही

संस्कार है, इन संस्कारों का इतिहास प्राचीन है। वैदिक संस्कार पद्धति के अन्तर्गत गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, मुण्डन, कर्णविध विद्यारंभ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास और अन्त्येष्टि संस्कार आते हैं। यह संस्कार व्यक्ति के जन्म पूर्व से लेकर मरणोत्तर तक अलग-अलग समय पर किये जाते हैं।

वैदिक ऋषि वैज्ञानिक थे। उन्होने जीवन को जन्म के पूर्व से लेकर मरणोत्तर तक संस्कारों कि विज्ञान सम्मत प्रक्रिया के साथ इस प्रकार अविच्छिन रुप से जोड़ दिया कि जीवन यात्रा में निरंतर परिशोधन प्ररगति के अलावा कुछ और अनिष्ट किसी का न होने पाए। संस्कारों से भरा ऋषि जीवन हमारी संस्कृति का मेरूदण्ड रहा है। हर संस्कार यज्ञ प्रक्रिया के साथ सम्पन्न होता है जो कि जीवन में महानता के अवतरण का एक माध्यम बनता रहा है। किसी और सभ्यता या संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण का इतना गूढ दार्शनिक समावेश अध्यात्मिकता के साथ नहीं देखा गया, जिससे गुण-सूत्र, जीन्स तक प्रभावित होते है। यह संस्कार परम्परा ही है, जिसने मानव में महामानव के अवतरण, देवत्व के अभिवर्द्धन, पर्यावरण संरक्षण और मूल्य युक्त संततियों के माध्यम से धरती पर सतयुगी परिस्थितियों के अवतरण का माहौल बनाया एवं वह वैसा बना भी रहा। जिसका मुख्य उद्देश्य स्वस्थ शरीर, शुद्ध पर्यावरण, स्वच्छ मन एवं सभ्य समाज की स्थापना है।[2]

पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व

पर्यावरण संरक्षण समस्त प्राणियों के जीवन और इस पृथ्वी के समस्त प्राकृतिक परिवेश से घनिष्ठ रूप संबंधित है। प्रदूषण के कारण सम्पूर्ण पृथ्वी प्रदूषित हो रही है। विज्ञान के क्षेत्र में असीमित प्रगति और नवीन आविष्कारों के कारण वर्तमान समय में मनुष्य प्रकृति पर विजय प्राप्त करना चाहता है। इस कारण पर्यावरण असन्तुलित हो रहा है। पृथ्वी पर जनसंख्या की निरंतर वृद्धि, औधोगिकरण और नगरीकरण प्रकृति के हरे-भरे क्षेत्रो को तीव्र गति से नष्ट कर रहे है। अतः प्रकृति के घटकों और जीवित प्राणियों के बीच संतुलन की स्थिति बनाए रखना आवश्यक है।

वैदिक संस्कार पद्धति में पर्यावरण संरक्षण

वेदों में पर्यावरण संरक्षण और शुद्धता को प्रमुख स्थान दिया गया है। वैदिक दर्शन में वन, वृक्ष और वन्य जीव संरक्षण को बहुत महत्त्व दिया गया है। वैदिक काल में इन संस्कार कार्यक्रमों में प्रकृति के संरक्षण की भी शिक्षा दी जाती थी। इनमें जीवन के लिए उपयोगी और औषधि प्रदान करने वाले पौधो की पूजा एवं पानी-खाद से संरक्षण के लिए प्रोत्साहित करने का कार्य किया जाता था, ताकि पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सके। भारतीय संस्कार परम्परा में दैनिक जीवन में पर्यावरण को आध्यात्मिकता से जोड़ते हुए पर्यावरण संरक्षण को प्रेरित करने का कार्य करती है। हरे पेड़ो को काटने पर प्रतिबंध था और ऐसे कार्य करने वालो के लिए दंड की व्यवस्था थी। वैदिक काल में भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के अनेक घटकों जैसे वृक्ष, जल, वायु, अग्नि, समुद्र नदी आदि को पवित्र मानकर पूजा जाता था।[3] पृथ्वी को माता का दर्जा दिया गया था।[4]

भारतीय संस्कृति और संस्कार परम्परा इस तथ्य का प्रमाण है कि श्री कृष्ण ने गोकुलवासियों को इन्द्र की पूजा के स्थान पर गोवर्धन पर्वत की पूजा के लिए प्रेरित किया। आज गंगा, यमुना, सरस्वती आदि अनेक नदियाँ पूजनीय है जो जल संरक्षण का प्रतिक हैं।

वैदिक काल में विभिन्न त्यौहारों, उत्सवों, संस्कार आयोजनों के धार्मिक कर्मकाण्डों, यज्ञ आदि से पर्यावरण सुरक्षा, स्वच्छता और संरक्षण को जोड़ा गया। इन आयोजनों में की जाने वाली प्रार्थना, शान्ति पाठ एवं स्वस्ति वाचन में औषधि, वनस्पति, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश सभी की शान्ति के लिए अनुरोध किया जाता है। यह सब पर्यावरण की स्वच्छता से ही सम्भव है, इसी स्वच्छता हेतु हमारे मनीषियों ने उत्सव और संस्कार की सतत परम्परा बनाई। सनातन परम्परा में सभी उत्सव और संस्कार कार्यक्रमों पर यज्ञों का आयोजन पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से ही किया जाता है।

वैदिक संस्कार परम्परा से युक्त भारतीय संस्कृति और धर्म वर्तमान और भविष्य की पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान करने में सहायक है।[5] वेदों के अध्ययन और अनुसंधान से ही भविष्य में मानव की प्रगति, सभ्यता, संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण का विकास संभव है।[6]

प्याऊ, तलाब, बावड़ी, पुल, कुएं बनाना एवं वृक्ष लगाना वैदिक ग्रन्थों में अच्छा कार्य माना गया है। इससे पुण्य प्राप्त होता और व्यक्ति स्वर्ग में निवास करता है।[7] वैदिक मनीषियों ने जल को देवत्व की संज्ञा देकर मनुष्य को इसके संरक्षण के लिए प्रेरित किया है। मत्स्य पुराण में पेड़ की तुलना मानव के दस पुत्रों की गई है।[8] अथर्ववेद में पीपल के पेड़ को देवताओं का निवास स्थान बताया है।[9] वर्तमान विज्ञान भी इसके महत्त्व को स्वीकार करती है कि पीपल का पेड़ 24 घण्टे ऑक्सीजन का उत्सर्जन करता है। वाराह पुराण में पेड़ के दान को प्रमुख स्थान दिया गया है और इसे भुमिदान एवं गोदान से भी श्रेष्ठ बताया है।[10]

पद्मपुराण में वनो के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए प्रार्थना की गई है कि हे वनस्पते! आप मुझे आयु, शक्ति, यश, तेज, संतान, पशु, धन, ज्ञान एवं बुद्धि प्रदान करे।[11] पुराण में पेड़ो को काटने को बीमारियों का कारण माना है।[12] पद्मपुराण में पुलस्य ऋषि भीष्म से वृक्षारोपण का महत्त्व बताते हुए कहते है कि पेड़ लगाने से पुत्रहीन को पुत्र की प्राप्ति होती है। पीपल का पेड़ लगाने से व्यक्ति धनवान और नीरोगी होता है। पाकड़ यज्ञ के समान फल प्रदान करता है। अशोक, शोक को नष्ट करता है। नीम आयु प्रदान करता है। जामुन लगाने से कन्या की प्राप्ति होती है। खैर से व्यक्ति रोग रहित होता है। अनार पत्नी प्रदान करने वाला है। गुलाब में देवी पार्वती और बेल में शिव का निवास होता है। चम्पा का पेड़ सौभाग्य प्रदान करता है। कटहल और चन्दन के पेड़ क्रमशः लक्ष्मी और पुण्य देने वाले है। मोगरे के पेड़ में गन्धर्व और अशोक पेड़ में अप्सराऐं निवास करती है। इस प्रकार वेदों में विभिन्न पेड़ों को उचित फल देने वाला बताकर इनके संरक्षण के लिए लोगों को प्रेरित किया है।

अथर्ववेद में उल्लेखित शांति सुक्त का पर्यावरण संरक्षण में प्रमुख स्थान है, घुलोक, पृथ्वी, अंतरिक्ष, समुद्र, जल, औषधियाँ ये सभी अनिष्ठों को दूर करके हमें सुख और शान्ति प्रदान करे।[13] इसमें बताया गया है कि व्यक्ति अपने क्रियाकलापों से पर्यावरण के तत्त्वों को दुषित न करे, ताकि प्रकृति के इन तत्त्वों से जीवन की सुरक्षा हो सके। इनको नष्ट करने और अधिक शोषण करने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ सभी जीवों का जीवन नष्ट हो जायेगा।

अथर्ववेद में व्याख्या है कि पृथ्वी अन्य चार प्रकृति तत्त्वों वायु, आकाश, जल, अग्नि के साथ समन्वयपूर्वक क्रियाशील रहकर समस्त जड़ चेतन को जीवन देती है। अथर्ववेद के अनुसार

पृथ्वी अपने आप में समस्त सम्पदा संग्रहित किए हुए है, जो कि संसार के सम्पूर्ण जीव जगत का पोषण करती है।[14]

अथर्ववेद में प्रार्थना की गई है कि पृथ्वी से हमें कई गुना फल प्राप्त हो, परन्तु साथ ही सावधान करते हुए कहा है कि हमारी खोज के लिए पृथ्वी का उत्खनन, पृथ्वी के मर्मस्थलों को हानि न पहुँचाए।[15] इसमंे पृथ्वी का अधिक दोहन न करने पर जोर दिया गया है।

अथर्ववेद में उल्लेख है कि पृथ्वी, अंतरिक्ष, अग्नि, सूर्य, जल और विश्व के समस्त देवों ने सृष्टि का सृजन किया है। इसलिए यजुर्वेद में कहा है कि पृथ्वी इन समस्त शक्तियों को ग्रहण कर, इन समस्त शक्तियों के लिए हमेशा कल्याणकारक हो। पृथ्वीवासी इन दैवीय शक्तियों को नुकसान न पहँुचाए।[16]

यजुर्वेद के अनुसार यज्ञ कुण्ड कि भांति पृथ्वी का विशाल हृदय मातृवत प्राणशक्ति वायु, जल और वनस्पतियों से सम्पन्न हो। वायुदेव दिव्य प्राणऊर्जा से संचारित हो। अतः हम इने कार्बन उत्सर्जन सेे प्रदूषित ने करें।[17]

वेदों में यज्ञ को भी पर्यावरण का संरक्षक माना गया है। यज्ञ मात्र धार्मिक पूजा-पाठ ही नहीं बल्कि दूषित वातावरण से मुक्त करने का सुरक्षा कवच है।[18] 'यज्ञ' मानसिक, शारीरिक और वनस्पतियों के विभिन्न रोगों के दूर करने के साथ-साथ प्रदूषित वातावरण से बचाने का प्रमुख वैज्ञानिक साधन है।[19]

यजुर्वेद के अनुसार पृथ्वी, यज्ञ कुण्ड की तरह अपने हृदय को वायु, जल एवं वनस्पतियों आदि प्राणशक्ति से पूर्ण करे। वायुदेव प्राणऊर्जा से संचारित होते है। अतः पृथ्वीवासी उसे दुषित न करे।[20] इसमंे मानव को सचेत किया गया है कि वे प्रदूषण से वायु की प्राण पोषक शक्ति ऑक्सीजन को दुषित न करें।

वेदांग की प्रेरणा से वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण

आधुनिक समय में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने की जरूरत है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति वैदिक दृष्टिकोण को प्राथमिकता देते हुए, इससे प्रेरणा लेकर पर्यावरण शिक्षा को शैक्षिक कार्यक्रम में एकीकृत किये जाने की आवश्यकता है। छात्रों को पर्यावरण साक्षरता प्रदान कर पर्यावरण के प्रति रूचियाँ, भावना, प्रेरणा, चिंता आदि उचित दृष्टिकोण का विकास कर उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाया जा सकता है। इसलिए भारत में अध्यापक शिक्षा परिषद् ने शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरण सुरक्षा की शिक्षा को शामिल किया। सफल पर्यावरण शिक्षा शिक्षकों के हाथ में है, इसलिए शिक्षकों मंे पाठ्यक्रमों को लागू करने के लिए उचित ज्ञान, कौशल एवं प्रतिबद्धता को विकसित करने के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

पर्यावरण और जीव एक दूसरे पर निर्भर है। पर्यावरण ही साहित्य और प्राणी को जीवतंता प्रदान करता है। वैदिक काल से ही ऋषि और कवि इस तथ्य से अवगत थे, अतः भारतीय संस्कृति में प्रकृति की देव के रूप में उपासना की जाती थी। वैदिक काल में पेड़-पौधों, वनस्पति आदि के अनेक लाभ बताकर और उन्हें आध्यात्मिकता से जोड़ते हुए लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रोत्साहित किया। वैदिक मनीषियों ने पर्यावरण को दूषित करने से मनुष्य जीवन और सृष्टि पर पड़ने वाले विनाशकारी प्रभावों की ओर संकेत करने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण करने के लिए प्रेरित किया है। वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण को प्रदूषित करने से मानव जीवन एवं सृष्टि पर पड़ने वाले विनाशक परिणामों की ओर संकेत करते हुए पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रेरित किया। वर्तमान के भौतिकवादी युग में हमें वेदों में निहित भावना का अनुसरण कर पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य करने है। वेदों से प्रेरणा लेते हुए, वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण के प्रति समग्र विश्व को सचेत और जागरूक बनाए जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ

- वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत-हिन्दी कोश, पृ. सं. 1083
- शर्मा, श्रीराम: षोडश संस्कार विवेचन
- शर्मा, श्रीराम: षोडश संस्कार विवेचन
- यन्तेमध्यं पृथिवी यच्य नभस्य, यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूव।
- तसु नो धेहर्याभ न पवस्व, माता भूमिः पुत्रों अहं पृथिव्याः। अथर्ववेद, 12/12
- सोजीत्रा, डॉ. विजय एस: वैदिक संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण। पृ. सं. 7,8
- कपूर, डॉ. बी. बी. एस: भारतीय संस्कृति, धर्म एवं पर्यावरण संरक्षण। पृ. सं. 28,29
- पदम पुराण, सृष्टि खंड, पृ. 169
- दशह्रद समः पुत्रो, दश पुत्र समोद्रुमः।। मत्स्य पुराण
- अश्वत्यों देव सदनः। अथर्ववेद, 5/413
- भुमि दानेन ये लोका गोदानेन त्व कीर्तताः।
- ते लोकाः प्राज्यनित पुंमि पादपानाः प्ररोहणे।। वाराह पुराण, 170/39
- आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजा पशुवसनिच।
- ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वं ंनो देहि वनस्पते। पदम पुराण, सृष्टि खण्ड, श्लोक 11, अध्याय 94
- रोदने व्याधिभभ्येति। पदम पुराण, सृष्टि खण्ड अध्याय 233
- शान्ता धौः शान्ता पृथ्वी शान्तमिक्ष्मुंर्वन्तुन्तरिक्षम्।
- शान्ता उदन्ततीरापः शान्ता न सन्त्वोषधीः।। अथर्ववेद, 19/9/1
- विश्वम्भरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरव्यवृक्षा जगतो निवेशनी। अथर्ववेद, 12/6
- वतते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदति रोहतु।
- माते मर्म विमृखरि मा ते हदयमर्पिपम। अथर्ववेद, 12/1/35
- द्योश्च म इदं पृथिवीं चान्तरिक्षं चमेव्यचः।
- अग्निः सूर्य आपो मेघां विश्वदेवाश्च सं ददुः।। अथर्ववेद, 12/1/53
- सन्तेवायुर्मातरिश्वा दधातूतनाया हृदयं यद्धिकस्तम्।
- यो देवानां चरसि प्राणथेन कस्मैदेव वषडस्तु तुभ्यम।। यजुर्वेद, 11/39
- ऋग्वेद, 1/13/12; 8/72/12

- अग्निहोत्र औषधि अग्नि कृष्णोतु भेषजम्। अथर्ववेद, 6/106/3
- वासक अनिंदिता: पर्यावरणीय अध्ययन (2014)
- अस्थाना, मधु: पर्यावरण एक संक्षिप्त अध्ययन (2014)
- पर्यावरण में भारत की भूमिका, प्राक्कथन, पृ. 4, कमलनाथ पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत सरकार, 1995
- व्यास, हरिश्चन्द्र: संस्कृति एवं पर्यावरण, पृ.सं. 152